



प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 10

अंक : 5

जनवरी, 2023

मूल्य : ₹2.00



मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

समेकित कृषि पद्धति: अतिरिक्त आय का स्रोत

हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है तथा पशुपालन कृषि का एक महत्वपूर्ण घटक है। देश के विकास और प्रगति में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है तथा देश का आर्थिक व सामाजिक ढांचा इसी पर टिका हुआ है। देश की लगभग दो तिहाई से अधिक आबादी गांवों में निवास करती है, जिनकी आय का प्रमुख स्रोत कृषि व पशुपालन है तथा कृषि व पशुपालन एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। छोटे ग्रामीण परिवारों की आय में पशुधन का लगभग 16 प्रतिशत योगदान है, जबकि सभी ग्रामीण परिवारों का राष्ट्रीय औसत 14 प्रतिशत है। इतना ही नहीं, पशुधन क्षेत्र देश की लगभग 8.8 प्रतिशत आबादी को निरन्तर रोजगार भी प्रदान करता है, जिसमें अधिकांश भूमिहीन और अकुशल आबादी सम्मिलित है। भारत में पशुधन सम्पदा की वृद्धि अनुमानतः लगभग 6 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से हो रही है। पशुपालन से हमें पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य उत्पाद जैसे दूध, अंडा, मांस आदि प्राप्त होते हैं साथ ही पशुशक्ति, जैविक खाद, घरेलू ईंधन के साथ-साथ ग्रामीण परिवारों के लिए नकद आय का एक नियमित स्रोत भी है। सूखे, अकाल व अन्य प्राकृतिक आपदाओं जैसी विपरीत परिस्थितियों में किसानों के लिए पशुधन एक बीमा के समान भी है। राजस्थान जैसे सूखे प्रदेश में अकेला कृषि व्यवसाय सम्भव एवं लाभप्रद नहीं है। यदि कृषि के साथ-साथ अन्य व्यवसाय जैसे डेयरी, मुर्गीपालन, बकरी पालन, भेड़ पालन, सूअर पालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम पालन, वर्मी कम्पोस्ट, हरे चारे का उत्पादन आदि व्यवसाय भी किये जायें तो कृषि से अधिक व टिकारु आय प्राप्त कर सकते हैं, इसे ही समेकित कृषि पद्धति कहा जाता है। समेकित कृषि पद्धति विशेष रूप से विभिन्न कृषि उद्यमों को एकीकृत करके छोटे किसानों को अधिक आय व रोजगार के निरन्तर अवसर प्रदान करती है। इसके साथ ही उत्पादकता में वृद्धि, खाद्य व पर्यावरण की सुरक्षा भी सुनिश्चित करती है, क्योंकि इसमें एक इकाई अन्य इकाईयों से जुड़ी हुई होती है, एक इकाई का उत्पाद अन्य इकाई में काम आते हैं। पशु उत्पादों के साथ-साथ यदि उनके उप-उत्पादों का उचित उपयोग किया जाये तो देश की अर्थव्यवस्था और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के साथ-साथ किसानों की आय में वृद्धि पर भी सीधा प्रभाव डालेगी। समेकित कृषि पद्धति में कृषि अपशिष्टों का कुशल पुर्नचक्रण, संसाधनों के बेहतर उपयोग तथा रोजगार भी पैदा करती हैं, इसमें पारिवारिक आय के कम होने के जोखिम कम होने के साथ-साथ वर्ष भर आय में स्थिरता व निरन्तरता भी सुनिश्चित होती है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर भी अपने कुछ चिन्हित पशु विज्ञान केन्द्रों पर समेकित कृषि पद्धति की विभिन्न इकाईयों की स्थापना करने जा रहा है, जिसके द्वारा किसानों एवं पशुपालकों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण दिये जाएंगे। इन पशु विज्ञान केन्द्रों पर किसान व पशुपालक भाई, प्रशिक्षण प्राप्त कर समेकित कृषि पद्धति अपनाकर अधिक आय अर्जित कर पाएंगे।

प्रदेश के समस्त कृषकों एवं पशुपालकों को

नव वर्ष 2023 की शुभकामनाओं सहित।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग



किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

—महात्मा गांधी



माननीय मुख्यमंत्री के कर कमलों से जोबनेर पशु विज्ञान केन्द्र के भवन का लोकार्पण

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 23 दिसम्बर को वेटेनरी विश्वविद्यालय के 16वें पशु विज्ञान केन्द्र के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण किया। कालवाड़ तहसील के कंवर का बास में आयोजित कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री ने झोटवाड़ा विधानसभा क्षेत्र की 22 परियोजनाओं के साथ पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर का लोकार्पण किया। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी, प्रभारी मंत्री जयपुर श्री शांति धारीवाल, कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री लालचंद कटारिया, कुलपति वेटेनरी विश्वविद्यालय प्रो. सतीश के. गर्ग, अन्य मंत्रीगण व गणमान्य अतिथियों के सान्निध्य में यह लोकार्पण हुआ। वेटेनरी विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रभारी अधिकारी, पशु विज्ञान केन्द्र जोबनेर, डॉ. अशोक बेंदा भी इस कार्यक्रम में मौजूद रहे। गौरतलब है कि राज्य सरकार ने वेटेनरी विश्वविद्यालय के प्रसार कार्यक्रमों की महत्ता को देखते हुए एवं पशुपालकों को उन्नत तकनीकों के माध्यम से उन्नयन के लिए वर्ष 2021-22 की बजट घोषणा के अर्न्तगत जोबनेर पशु विज्ञान केन्द्र की स्थापना की क्रियाचिन्ती हेतु प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति प्रदान की गई थी। कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि इस पशु विज्ञान केन्द्र के माध्यम से राज्य के पशुपालकों को पशुपालन प्रशिक्षण, सलाहकारी सेवा, तकनीकी हस्तान्तरण और रोग निदान सेवाओं का लाभ मिल सकेगा और पशुपालकों की पशुपालन सम्बन्धित स्थानीय समस्याओं का समाधान जिले में ही सम्भव हो सकेगा। अधिष्ठाता पी.जी.आई.वी.ई.आर. प्रो. शीला चौधरी, अधिष्ठाता डेयरी एवं खाद्य तकनीकी महाविद्यालय प्रो. धर्म सिंह मीणा, लाईजनिंग ऑफिसर, राजुवास, प्रो. गोविन्द सहाय गौतम भी इस अवसर पर मौजूद रहे।



राज्य सरकार के कार्यकाल के चार वर्ष पूर्ण विश्वविद्यालय प्रदर्शनी का आयोजन

राजस्थान सरकार के कार्यकाल के चार वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर दिनांक 22-24 दिसम्बर, 2022 को रविन्द्र रंगमंच, बीकानेर में आयोजित राज्य सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं पर आधारित सफलता की कहानियां से जुड़े छायाचित्र प्रदर्शनी में निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा राज्य सरकार के पिछले चार वर्षों के दौरान किये गये विकास कार्यों को छाया चित्र प्रदर्शनी के माध्यम से दर्शाया गया। विश्वविद्यालय की विकास प्रदर्शनी का अवलोकन गोविन्दराम मेघवाल, माननीय आपदा प्रबंधन मंत्री, भंवरसिंह भाटी, माननीय ऊर्जा मंत्री, महेंद्र गहलोत, अध्यक्ष, केशकला बोर्ड, राजस्थान सरकार के अलावा डॉ. नीरज के. पवन, सम्भागीय आयुक्त, बीकानेर, भगवती प्रसाद कलाल, जिला कलक्टर, बीकानेर सहित विभिन्न जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों द्वारा अवलोकन कर सराहना की। श्री अरुण प्रकाश शर्मा, कुलसचिव एवं प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा भी इस अवसर पर मौजूद रहें।



वेटेनरी एनाटॉमी की तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस फॉरेंसिक साइंस में पशु एनाटॉमी की महत्वपूर्ण भूमिका : कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग

वेटेनरी विश्वविद्यालय के संघटक वेटेनरी महाविद्यालय, नवानियां, उदयपुर द्वारा इंडियन एसोसिएशन ऑफ वेटेनरी एनाटॉमिस्ट की तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस 20-22 दिसम्बर तक "पशुधन एवं वन्यजीव सेक्टर में एनाटॉमिकल अध्ययन द्वारा एडवांसमेंट से वैश्विक सतत विकास हेतु प्रारंभिक प्रयत्न" विषय पर आयोजित की गई। कांफ्रेंस के मुख्य अतिथि डॉ. डी.एन. शर्मा पूर्व अधिष्ठाता, पालमपुर वेटेनरी कॉलेज ने एनाटॉमी का वाइल्डलाइफ एवं फॉरेंसिक अध्ययन में महत्व पर प्रकाश डाला। संस्थापक एवं पूर्व कुलपति, राजुवास, प्रो. ए.के. गहलोत ने वेटेरोलीगल एवं पोस्टमार्टम में एनाटॉमी के आधारभूत ज्ञान के महत्व को बताया तथा एनाटॉमी प्रायोगिक अध्ययन में 2डी और 3डी आधुनिक तकनीकों के विकास की सराहना की। वेटेनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने अपने शोधकाल के दौरान एनाटॉमी के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि वेटेनरी क्षेत्र में शोध कार्य हेतु एनाटॉमी एक बेसिक विषय है जिसका सभी को ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। उन्होंने फॉरेंसिक साइंस में एनाटॉमी के महत्व को बताया तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इंटरडिसिप्लिनरी शोध की आवश्यकता को पर बल दिया। आई.ए.वी.ए. के सेक्रेटरी जनरल डॉ. पवन कुमार ने सोसाइटी का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। सोसायटी के अध्यक्ष डॉ. पी.वी.एस. किशोर ने एनाटॉमी में गुणवत्ता हेतु शोध हेतु इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी अध्ययन के महत्व पर बल दिया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि संस्थापक एवं पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत व विशिष्ट अतिथि प्रो. मोहन भट्टाचार्य, पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय याक अनुसंधान केन्द्र, आई.सी.ए.आर थे। अधिष्ठाता प्रो. आर.के. जोशी ने सभी अतिथियों और आगुन्तकों का स्वागत किया। कांफ्रेंस के आयोजन सचिव प्रो. बलवंत मेशराम ने बताया कि इस तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में देश व विदेश से विभिन्न विश्वविद्यालय और सोसायटी से जुड़े लगभग 250 वैज्ञानिक, विषय विशेषज्ञ, फील्ड प्रैक्टिशनर, शोधार्थी एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया।





पशुपालन में विविधता को अपनाना होगा : कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधीन संचालित पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया जिला नागौर में आत्मा योजनान्तर्गत "पशुपालन में प्रयुक्त विभिन्न पारंपरिक पशु चिकित्सा पद्धतियां" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 15-16 दिसम्बर, 2022 को मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने अपने उद्बोधन में कहा कि नागौरी बैल की विशेषताओं की वजह से यह जिला हमेशा ही पशुपालन में अग्रणी रहा है। वर्तमान में बकरी पालन में यह जिला तेजी से बढ़ रहा है। अतः हमें इस क्षेत्र में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वर्षभर पशुपालकों को आय होती रहे इसलिए पशुपालन में विविधता को अपनाना होगा जिसके लिए केन्द्र पर बकरी पालन एवं बैकयार्ड मुर्गीपालन की प्रदर्शन इकाई की स्थापना की जायेगी ताकि किसानों एवं पशुपालकों को नवीनतम तकनीकों का अधिकतम लाभ हो सके साथ ही किसानों एवं पशुपालकों की आय में वृद्धि की जा सके। प्रो. राजेश कुमार धूरिया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर ने अपने स्वागत उद्बोधन में अतिथियों का स्वागत करते हुए केन्द्र की विभिन्न गतिविधियों एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित किसानो एवं पशुपालकों के हितार्थ जन-कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. महेन्द्र तंवर ने सभी अतिथियों एवं प्रशिक्षणार्थियों आभार व्यक्त किया।



पशुधन सहायकों ने समझा जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र, राजुवास, बीकानेर द्वारा पशुपालन विभाग के बीकानेर एवं चूरु जिले के विभिन्न पशु चिकित्सालयों व पशु उपकेन्द्रों पर कार्यरत 30 पशुधन सहायकों का पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 21 दिसम्बर को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में डॉ. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, निदेशक अनुसंधान प्रो. हेमन्त दाधीच, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूडिया, अतिरिक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, बीकानेर की उपनिदेशक डॉ. गीता बेनीवाल ने प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित किया। केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. दीपिका धुडिया ने बताया कि पशुधन सहायकों को जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट का निस्तारण पूरी जिम्मेदारी के साथ करना चाहिए। प्रो. प्रवीण बिश्नोई, विभागाध्यक्ष, सर्जरी एवं रेडियॉलोजी विभाग एवं केन्द्र के सह-अन्वेषक डॉ. मनोहर सैन ने व्याख्यान प्रस्तुत किए। प्रशिक्षण में डॉ. रेखा लोहिया व डॉ. चाँदनी जावा ने पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के पृथक्करण व निस्तारण का प्रायोगिक विवरण दिया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. निशा चौपड़ा एवं अन्य फ़ैकल्टी सदस्य मौजूद रहे। प्रशिक्षण के समापन पर प्रो. उर्मिला पानू परीक्षा नियंत्रक, राजुवास एवं प्रशिक्षण आयोजन सचिव डॉ. दीपिका धूडिया ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।



आपदा मित्र योजना के तहत प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र द्वारा भारत सरकार द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण आपदा मित्र योजना के तहत 12 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 24 दिसम्बर को सम्पन्न हुआ। पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के मुख्य अन्वेषक प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि इस 12 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में राष्ट्रीय कैंडेट कोर, राष्ट्रीय सेवा योजना, नागरिक सुरक्षा विभाग नेहरू युवा केन्द्र से जुड़े 43 प्रशिक्षणार्थी को भूकम्प, बाढ़, आगजनी, इमारत ध्वस्त जैसी विभिन्न आपदाओं की स्थिति से बचाव के विभिन्न तरीकों के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण कार्य में राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (एस.डी.आर.एफ.) के प्रशिक्षक किशनाराम, सुखराम, रूपाराम एवं पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के डॉ. सोहेल मोहम्मद एवं शैलेन्द्र सिंह शेखावत का सहयोग रहा।



पशुओं में लम्पी रोग से बचाव पर व्याख्यान

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में 28 दिसम्बर को स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए पशुओं में लम्पी स्किन बीमारी से बचाव एवं रोकथाम हेतु व्याख्यान आयोजित किया गया। डॉ. नवीन कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान संस्थान, हिसार ने विद्यार्थियों को पशुओं में फैलने वाली लम्पी स्किन रोग के बचाव एवं रोकथाम हेतु जानकारी प्रदान की। उन्होंने लम्पी स्किन बीमारी रोकने हेतु स्वदेशी वैक्सीन के परीक्षण, निर्माण, उत्पादन एवं प्रभाव पर अपने अनुभव साझा किये एवं विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान किया। कार्यक्रम के दौरान निदेशक मानव संसाधन विकास डॉ. बी.एन. श्रुंगी, डॉ. सीताराम गुप्ता, डॉ. देवी सिंह एवं अन्य फ़ैकल्टी सदस्य मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अशोक डांगी ने किया।





पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण पर स्नातकोत्तर विद्यार्थी हुए प्रशिक्षित

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र, राजुवास, बीकानेर द्वारा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के विभिन्न विभागों में अध्ययनरत स्नातकोत्तर एवं विद्यावाचस्पति के 31 विद्यार्थियों को पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण 22 दिसम्बर को प्रदान किया गया। प्रशिक्षण उद्घाटन सत्र को प्रो. बसन्त बैस, निदेशक पी.एम.ई., डॉ. बी.एन. श्रृंगी, निदेशक मानव संसाधन विकास, राजुवास ने सम्बोधित किया। पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. दीपिका धूडिया ने बताया कि विद्यार्थियों को जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट का निस्तारण का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए तथा आमजन व पशुपालकों को भी इसके बारे में जागरूक करना चाहिए। प्रशिक्षण में डॉ. मनोहर सेन, डॉ. रेखा लोहिया व डॉ. चाँदनी जावा ने व्याख्यान के साथ-साथ पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के पृथक्करण व निस्तारण का प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रशिक्षण के समापन पर प्रो. प्रवीण बिश्नोई, निदेशक क्लीनिक्स एवं आयोजन सचिव डॉ. दीपिका धूडिया ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।



यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढ़वाला में पशु जैव विविधता संरक्षण जागरूकता शिविर

वैटरनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव विविधता संरक्षण केंद्र द्वारा गांव गाढ़वाला में 3 दिसम्बर को एक दिवसीय पशु जैव विविधता संरक्षण जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। पशु जैव विविधता संरक्षण केंद्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. मोहनलाल चौधरी ने बताया कि पशु जैव विविधता वातावरण संरक्षण के साथ-साथ पशुपालकों की आर्थिक स्थिति में भी पूर्ण सहयोगी है, लेकिन वर्तमान परिवेश में जलवायु परिवर्तन, औद्योगिक विस्तार, भूमि उपयोग एवं कृषि में तकनीकी विस्तार से जैव विविधता में कमी आयी है। पशु पक्षियों एवं वनस्पति की कई प्रजातियां जागरूकता के अभाव में विलुप्त हो रही है अतः किसानों एवं पशुपालकों में जागरूकता उत्पन्न करके जैव विविधता संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाये जा सकते हैं। डॉ. नरसीराम गुर्जर ने शिविर के दौरान पशुपालकों को जैव विविधता के महत्व एवं इसके संरक्षण पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। पशुपालकों को इस दौरान खनिज लवण-मिश्रण के पैकेटस भी वितरित किये गये।



सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-जनवरी, 2023

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
ब्लू टंग रोग	भेड़	-	-	-	अजमेर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, गंगानगर, जोधपुर, जैसलमेर, पाली, राजसमन्द
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	दौसा	-	-	-
खुरपका-मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊँट	दौसा, जयपुर	अजमेर, श्रीगंगानगर अलवर, सीकर, भीलवाड़ा,	जोधपुर	बारा, बाड़मेर, भरतपुर, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, चूरू, धोलपुर, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, जालोर, झालावाड़, झुंझुनू, करौली, कोटा, नागौर, पाली, राजसमन्द, सिरौही, टोंक, उदयपुर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	दौसा, जोधपुर, करौली	-	-	अलवर, बारा, बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, चूरू, धोलपुर, डूंगरपुर, चूरू, धोलपुर, डूंगरपुर, जयपुर, जालोर, झालावाड़, झुंझुनू, नागौर, पाली, सर्वाई माधोपुर, टोंक उदयपुर
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	बाड़मेर, चूरू, दौसा, जयपुर	जोधपुर, टोंक	-	-
माता रोग	भेड़, बकरी	चूरू, झुंझुनू	-	-	बाड़मेर, नागौर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जोधपुर, जयपुर, सीकर
स्वाइन फीवर	सूकर	जयपुर	-	-	-
थीलेरिओसिस	गाय के बछड़े	हनुमानगढ़	-	-	-
ट्रिपेनोजोमोसिस	गाय, भैंस, ऊँट	-	-	-	गंगानगर
बी.क्यू.	गाय	-	-	-	गंगानगर, हनुमानगढ़

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें - प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, वैटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं डॉ. जे.पी. कछावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन- 0151-2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224



पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 5, 6, 7, 8 एवं 9 दिसम्बर को गांव दूधवाखारा, ब्रह्मनगर, हडीयाल, डिग एवं रावतसर गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 109 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा 5, 9 एवं 12 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 23 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 163 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया-लाड़नू द्वारा 2, 3, 5 एवं 13 दिसम्बर को गांव झेकरिया, श्रीकृष्णपुरा, झरझिया एवं मरनावा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण एवं 15-16, 26-27 एवं 30-31 दिसम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 174 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 5, 9, 16, 17 एवं 19 दिसम्बर को गांव जरहरा, पडवा, हीरानगर, हेलक एवं अनिपुर गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 115 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 13, 16, 27 एवं 30 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा 7 दिसम्बर को गांव आमली में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 105 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 9, 13, 16 एवं 26 दिसम्बर को गांव सोलह खम्बा, भैंसेने, पकरी, नगर का पुरा एवं घुघरई गांवों में तथा दिनांक 19 एवं 28 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 208 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 6, 8 एवं 15 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर दिनांक 12 एवं 14 दिसम्बर को गांव भीरुखेरा एवं नूरसर गांवों में तथा 27 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 189 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही द्वारा 9 एवं 15 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 41 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 9, 13, 14 एवं 16 दिसम्बर को गांव गंदीफली, ताथेड़, किशनपुरा तकिया, रामखेड़ली तथा गंगाईचा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण तथा 21-22 दिसम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 169 पशुपालकों व कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनू

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनू द्वारा 5, 7, 9 एवं 12 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा 26-27 एवं 29-30 दिसम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 169 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 7, 8, 9 एवं 16 दिसम्बर को गांव घोरीआमली, अम्बाखेड, शिवपुरा एवं इंदरवा गांवों में आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 114 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 14, 16, 17 एवं 27 दिसम्बर को गांव पचकोडीया, सांखला का बास, सुखालपुरा एवं सबरामपुरा-झोटवाड़ा में एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 4-5 एवं 8-9 दिसम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 156 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालोर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालोर द्वारा 7, 12, 26 एवं 27 दिसम्बर को गांव जोड़वारा, थूर, भारूरी एवं जसवन्तपुरा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 84 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 8, 17, 26 एवं 30 दिसम्बर को गांव भूकरका आपूवाला, कीकरालिया एवं सिकरोडी में एक दिवसीय एवं 13-16 एवं 19-22 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित चार दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 117 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।





बर्ड फ्लू से भी सावधानी जरूरी

बर्ड फ्लू पक्षियों से मनुष्य में होने वाला संक्रामक एवं पशुजन्य रोग है जिसके कारण इस रोग से ग्रसित मुर्गियां बीमार होकर एक-एक कर मरने लगती हैं इस कारण हर साल लाखों मुर्गियों को केवल इसलिए नष्ट किया जाता है ताकि बर्ड फ्लू का संक्रमण मनुष्यों में न फैल सके।

क्या होता है बर्ड फ्लू:

बर्ड फ्लू जिसे एवियन इन्फ्लुएंजा या एवियन फ्लू के नाम से भी जाना जाता है। एवियन इन्फ्लुएंजा वायरस एच 5 एन की वजह से होता है। बर्ड फ्लू का संक्रमण मुर्गी, टर्की, बत्तख, मोर आदि पक्षियों में तेजी से फैलता है। यह वायरस इतना खतरनाक होता है कि इससे मनुष्य एवं पक्षियों की मौत भी हो सकती है।

- ❖ बर्ड फ्लू संक्रमित पक्षी के मल, नाक के स्राव, मुंह की लार तथा आंखों से निकलने वाले पानी के सम्पर्क में आने से होता है।
- ❖ मनुष्यों में यह संक्रमण संक्रमित पक्षी के सम्पर्क में आने से, संक्रमित पक्षियों के मांस (कच्चा मांस), कच्चे अंडे या हाफ फ्राइड अंडे आदि के सेवन करने से होता है।
- ❖ इसके अलावा मनुष्यों में यह संक्रमण संक्रमित व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को भी हो सकता है।

संक्रमित पक्षियों में बर्ड फ्लू के लक्षण:

- ❖ पक्षी की आंख, गर्दन और सिर के आस-पास सूजन आना।
- ❖ कलंगी और टांगों पर नीलापन आ जाना।
- ❖ पक्षी के शरीर में थकान और सुस्ती आना।
- ❖ सांस लेने में परेशानी तथा नाक व आंख में पानी आना।
- ❖ पक्षी के आहार लेने में कमी आना।
- ❖ अचानक पंखों का गिरना शुरू हो जाना।
- ❖ अंडा उत्पादन में गिरावट।
- ❖ पक्षी का अचानक मर जाना।

बर्ड फ्लू से मुर्गियों सहित अन्य पक्षियों को बचाने के उपाय:

- ❖ दो प्रजाति के पक्षियों को एक ही स्थान पर ना रखें क्योंकि यदि इनमें से

एक पक्षी भी बर्ड फ्लू से संक्रमित हुआ तो वो उसी स्थान पर अन्य प्रजाति के पक्षियों को भी संक्रमित कर देगा।

- ❖ पोल्ट्री फार्म में बाहरी पक्षियों एवं व्यक्तियों का प्रवेश वर्जित होना चाहिए क्योंकि यदि बाहरी पक्षी या व्यक्ति बर्ड फ्लू संक्रमित है तो ये पक्षियों के साथ-साथ मनुष्यों के लिए भी खतरनाक साबित हो सकता है, इसलिए पोल्ट्री फार्म पर जैव सुरक्षा रखनी चाहिए।
- ❖ पोल्ट्री फार्म में नया उपकरण या कोई नया पक्षी लायें तो उसे आवश्यक दवाओं के छिड़काव से संक्रमण मुक्त करें इससे काफी हद तक बर्ड फ्लू के खतरे से बचा जा सकता है।
- ❖ यदि फार्म में नये चूजे लेकर आ रहे हैं तो उन्हें 30 दिनों तक संगरोध गृह में रखें उसके बाद ही स्वस्थ चूजों के साथ रखें।
- ❖ पक्षियों के बाड़े को स्वच्छ रखें इसके लिए पोल्ट्री फार्म की नियमित सफाई करें तथा समय-समय पर चूने के घोल का छिड़काव करें।
- ❖ बाड़े की क्षमता के अनुसार ही मुर्गियों रखें ताकि उन्हें पर्याप्त स्थान व दूरी मिल सके जिससे बर्ड फ्लू होने का खतरा कम होगा।
- ❖ यदि बाड़े के किसी पक्षी में बर्ड फ्लू के लक्षण दिखाई दे तो उस पक्षी को अन्य स्वस्थ पक्षियों से तुरन्त अलग कर दें तथा इसकी सूचना निकटतम पशु चिकित्सालय को दें ताकि बर्ड फ्लू के खतरे से निपटने के लिए आवश्यक कदम उठाये जा सके। ऐसा करके मुर्गीपालक अपने पोल्ट्री फार्म में बर्ड फ्लू को फैलने से रोक सकते हैं।

बचाव:

- ❖ संक्रमित पक्षी खासकर मरे हुए पक्षियों से दूर रहें तथा मृत पक्षी का निस्तारण गहरे गड्डे में करें।
- ❖ बर्ड फ्लू का संक्रमण यदि फैला है तो अंडे, मांस इत्यादि का सेवन न करें। यदि कर रहे हैं तो अंडे, मांस आदि को अच्छे से धोकर, पकाकर या उबालकर ही काम में लें।

संक्रमण वाले एरिया में जाने से बचे, अगर जाना जरूरी हो तो पी.पी.ई. किट पहन कर ही पोल्ट्री फार्म या संक्रमित एरिया में जायें।

डॉ. दीपिका धूड़िया

सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत की सांवरमल ने

चूरू जिले के गांव सातड़ा के प्रगतिशील एवं जागरूक पशुपालक सांवरमल माली ने कृषि के साथ-साथ पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत की। सांवरमल का कहना है कि खेती के साथ साथ पशुपालन से किसान अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकता है। शुरू-शुरू में अपने घर की आवश्यकता के अनुसार पशुपालन को अपनाया परन्तु दूध की उपयोगिता को देखते हुए उन्होंने पशुपालन को डेयरी व्यवसाय के रूप में शुरू कर दिया। सांवरमल के पास 15 बीघा जमीन है परन्तु उनका कहना है कि जितनी बचत उन्होंने पशुपालन से हो रही है उतनी बचत उन्हें खेती से नहीं हो पा रही। वर्षा पर निर्भर होने के कारण उन्होंने पशुपालन को अधिक महत्व दिया। वर्तमान में सांवरमल के पास तीन गाय व 4 भैंस तथा 10 बकरीयां हैं जिनसे लगभग 30,000 रु. की प्रतिवर्ष की बचत कर रहे हैं उन्होंने पशुओं के घूमने-फिरने के लिए भी अलग प्रबंधन कर रखा है। सांवरमल पशुओं का टीकारण भी समय-समय पर पूरा करवा रहे हैं। कर्मीनाशक दवाईयों का उपयोग, सन्तुलित पशु आहार के साथ साथ ग्याभिन पशुओं की उचित देखभाल के साथ नियमित रूप से खनिज लवण भी पशुओं को देते रहते हैं। सांवरमल पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) के वैज्ञानिकों से समय-समय पर पशुपालन गतिविधियों तथा पशुरोग एवं उनसे बचाव से सम्बन्धित जानकारियां प्राप्त करते रहते हैं। सांवरमल ने बताया कि पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों एवं उनके द्वारा दी जाने वाली जानकारियों से पशुपालन के क्षेत्र में उन्हें काफी फायदा हुआ और वे पशुधन से ज्यादा मुनाफा कमाने में सफल रहें। सांवरमल अन्य पशुपालकों को भी पशु विज्ञान केन्द्र, से जुड़ने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

सम्पर्क- सांवरमल पुत्र हिम्मताराम माली, गांव सातड़ा तहसील व जिला चूरू (मो. 7014505667)





खरगोश पालन से आय में करें वृद्धि

खरगोश पालन के लाभ:

- ❖ छोटे आकार का जानवर होने के कारण बहुत कम जगह की आवश्यकता होती है। खरगोश की एक छोटी इकाई को घर में आसानी से पाला जा सकता है।
- ❖ कम समय में उच्च उत्पादन दक्षता: खरगोश अत्यधिक उर्वरता वाला प्रजनन करने वाला जानवर है। इनका गर्भकाल केवल 30 दिनों का होता है। खरगोश का उत्पादन वर्ष में 4 से 5 बार किया जा सकता है। एक वयस्क खरगोश एक साल में 20-25 बच्चे पैदा कर सकता है। खरगोश कम उम्र में परिपक्व हो जाते हैं और 6-7 महीने में उत्पादन के लिए तैयार हो जाते हैं।
- ❖ खरगोशों की एक छोटी इकाई (7 मादा और 3 नर) को रसोई के कचरे, चारे की पत्तियां, खाने योग्य खरपतवार, घास, पेड़ की पत्तियां, सब्जियों के कचरे आदि से सफलतापूर्वक पाला जा सकता है।
- ❖ तेजी से विकास दर: खरगोश 10-12 सप्ताह के भीतर 1.5-1.8 किलोग्राम वजन प्राप्त कर लेता है।

आवास प्रबंधन:

खरगोश को तीन अलग-अलग हाउसिंग सिस्टम में पाल सकते हैं-

पिंजरा प्रणाली:

- ❖ पिंजरों को पंक्तियों में एकल या स्तरीय प्रणाली में व्यवस्थित किया जाता है।
- ❖ शेड का आकार जानवरों की संख्या पर निर्भर करता है।
- ❖ पिंजरे का सामान्य आकार 2.5 x 2 x 2.5 फीट होता है।
- ❖ बच्चे देने की प्रक्रिया के लिए पिंजरा थोड़ा बड़ा (4 फीट x 3 फीट) होना चाहिए।
- ❖ पिंजरों में पानी, गोबर, मूत्र आदि की निकासी की व्यवस्था होनी चाहिए।

हच प्रणाली:

- ❖ यह एक स्व:निहित पिंजरा है, जिसे आवश्यकता पड़ने पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित किया जा सकता है।
- ❖ हच को लकड़ी, बांस या लोहे के फ्रेम की मदद से बनाया जा सकता है।
- ❖ प्रत्येक बॉक्स का आकार 3.5 फीट x 3 फीट x 3.5 फीट हो सकता है।
- ❖ हच में 2-8 बॉक्स हो सकते हैं।
- ❖ यह पद्धति खरगोशों को घर में पालने के लिए उपयुक्त है।

फर्श प्रणाली:

- ❖ इस प्रणाली में खरगोशों को मुर्गी की तरह फर्श पर रखा जाता है, लेकिन फर्श सीमेंट कंक्रीट का होना चाहिए।
- ❖ विभिन्न प्रकार के खरगोशों को समायोजित करने के लिए घर को विभाजित किया जा सकता है जैसे उत्पादक, फायर, वयस्क नर और मादा आदि।
- ❖ एक खरगोश के लिए करीब 4 वर्ग फीट जगह की जरूरत होती है।



- ❖ हालांकि उच्च आर्द्रता और वर्षा वाले क्षेत्रों में इस प्रणाली की सलाह नहीं दी जाती है।

प्रजनन प्रणाली और प्रबंधन:

- ❖ **प्रजनन:** खरगोश 6-7 महीने की उम्र में परिपक्वता प्राप्त करते हैं, खरगोशों में गर्भकाल की अवधि 30-31 दिन होती है, नवजात शिशुओं के लिए घोंसला तैयार करने में, गर्भावस्था के 25 वें दिन मादा खरगोश को साफ-सूखी बिस्तर सामग्री जैसे घास/धान प्रदान की जानी चाहिए, एक मादा खरगोश 6-12 बच्चों को जन्म देती है, उचित योजना बनाकर प्रति वर्ष 4-5 संतान प्राप्त की जा सकती है, खरगोश को 3-4 साल तक पाला जा सकता है, मादा और नर अनुपात 10:1 है।

नवजात बच्चों की देखभाल:

- ❖ नवजात खरगोशों के शरीर पर बाल नहीं होते हैं और वे 9-10 दिनों तक देख नहीं पाते हैं। चौथे दिन से बाल विकसित होने लगते हैं, लगभग 20 दिनों के युवा खरगोश फीड को खाना शुरू कर देते हैं।

वीनिंग का उचित समय:

- ❖ उनकी वृद्धि और खाने की क्षमता के आधार पर 30 से 42 दिनों के बीच युवा खरगोशों को उनकी माताओं से अलग किया जा सकता है।
- ❖ सभी युवा खरगोशों को हमेशा साथ रखने की सलाह दी जाती है।
- ❖ वीनिंग के कुछ दिन बाद और फिर धीरे-धीरे उन्हें अलग-अलग पिंजरों में अलग कर दें।
- ❖ 45 दिनों में तैयार हुए युवा खरगोशों का एक जत्था करीब 1 लाख रु. में बिकता है। इनका उपयोग प्रजनन, मांस और ऊन के व्यापार के लिए किया जाता है।

खरगोश फीड प्रणाली:

- ❖ घर के आंगल में अगर मादा खरगोश साल में 4-5 बार प्रजनन करती है तो एक साल में 3-4 लाख रु. के खरगोश बेचे जाते हैं, जबकि पूरी यूनिट की लागत 1-1.5 लाख रु. आती है। घरेलू खरगोशों को उपलब्ध रसोई के स्क्रेप, सब्जियों और घास के साथ प्रबंधित किया जा सकता है, लेकिन अर्द्ध-व्यावसायिक और व्यावसायिक फॉर्मों के लिए जहां बड़ी संख्या में खरगोशों को रखा जाता है, संतुलित आहार आवश्यक है। इनको गुणवत्तापूर्ण चारा, फसलें, हरी फलियां देकर 40-50 प्रतिशत फीड कम किया जा सकता है।

डॉ. राहुल चौधरी, डॉ. परमजीत सिंह एवं डॉ. मुकेशचन्द्र शर्मा
पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौड़गढ़)



वर्मीकम्पोस्ट : एक महत्वपूर्ण खाद

प्रिय पशुपालक एवं किसान भाइयों।
नववर्ष की हार्दिक शुभकमनाएं।
कृषि में फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए रासायनिक खाद का अंधाधुंध उपयोग किया जा रहा है जिससे मृदा की उर्वरता कम होती जा रही है तथा रासायनिक खाद के उपयोग करने से खेतों में पानी की आवश्यकता ज्यादा पड़ती है, इसके अलावा रासायनिक खाद किसान के लिए लाभदायक सूक्ष्म जीवों को मार देती है तथा पर्यावरण के लिए भी नुकसान दायक होती



है। लोगों में स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण जैविक उत्पादों की मांग बढ़ती जा रही है। जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए जैविक खेती के लिए जैविक खाद का इस्तेमाल करने लगे हैं। जैविक खेती के लिए वर्मी कम्पोस्ट सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि यह खाद कम समय व कम कीमत में तैयार हो जाती है। इस खाद को केंचुआ खाद के नाम से भी जाना जाता है। केंचुओं के द्वारा जैविक पदार्थों को खाने के बाद जो अपशिष्ट पदार्थ मल के रूप में बाहर निकलता है इसे ही वर्मी कम्पोस्ट या केंचुआ खाद कहते हैं। यह फसलों के लिए काफी लाभकारी होता है। यह केंचुआ खाद कीड़े के द्वारा वनस्पतियों व भोजन के कचरे आदि को विघटित करके बनाई जाती है। वर्मी कम्पोस्ट दो से तीन माह में बनकर तैयार हो जाती है, इसमें नाइट्रोजन, पोटैश, सल्फर पाया जाता है। इसके अलावा इसमें सूक्ष्मजीव, एन्जाइम, विटामिन तथा वृद्धि-वर्धक हार्मोन प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। वर्मी कम्पोस्ट खाद मिट्टी की उपजाऊ तथा उर्वरा शक्ति को भी बढ़ाती है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव पौधों की वृद्धि पर पड़ता है साथ ही यह मिट्टी की भू-क्षरण को कम करती है तथा जल धारण क्षमता को बढ़ाती है। वर्मी कम्पोस्ट खाद बनाने से पशुपालक को गोबर के निस्तारण में भी मदद मिलती है तथा इससे अतिरिक्त आय भी प्राप्त होती है। अतः किसान व पशुपालक भाइयों को खेत में रासायनिक खाद की जगह वर्मी कम्पोस्ट का उपयोग करना चाहिए। इस खाद को बनाना भी आसान है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधीन विभिन्न जिलों में संचालित पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से वर्मी कम्पोस्ट बनाने के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण भी आयोजित किये जाते हैं। पशुपालक व किसान भाई इन केन्द्रों पर प्रशिक्षण प्राप्त कर वर्मी कम्पोस्ट खाद को अपने घर पर ही बना सकते हैं तथा अपनी भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ा सकते हैं एवं रासायनिक खाद के दुष्प्रभावों को कम कर सकते हैं।

“ धीणे री बात्यां ”
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

email : deerajuv@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में



स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया

॥ पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ॥